LOK SABHA

Monday, August 9, 1971/*Sravana* 18, 1893 (*Saka*)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

OBITUARY REFERENCE

MR. SPEAKER : Hon. Members, I have to inform the House of the sad demise of Pandit Vinodanand Jha who passed away at Kotakal, Kerala, last night at the age of 71.

Pandit Vinodanand Jha was a sitting Member of this House representing Darbhanga constituency of Bihar. He was a Member of the Constituent Assembly during 1949-50. He served the State of Bihar in many capacities. He was elected to the Bihar Legislative Assembly in 1936 and was Parliamentary Secretary, Bihar, from 1936-38. Later in 1946, he became a Minister in the Bihar Cabinet. Thereafter he rose to be the Chief Minister of Bihar and held that office till 1963. He was a scholar of repute and always championed the cause of aboriginals and backward classes. He was a stalwart freedom-fighter, tall amongst his contemporaries—a great Indian who loved his people and country above everything else. He had not been keeping good health for quite some time, but despite that he had been attending the House till a few days back. By his passing away the country has lost one of the most respected elder statesmen.

We deeply mourn the loss of this distinguished colleague and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF ATOMIC ENERGY, MINISTER OF HOME AFFAIRS AND MINISTER OF INFORMATION & BROADCASTING (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Sir, I rise with deep sorrow and a sense of shock. Death has snatched away from us a great patriot and scholar, a veteran colleague, whom we held in high respect for his integrity and dedication.

Shri Binodanand Jha was a father figure in Bihar. His record of service to that State as legislator and Chief Minister and to the entire country as a statesman of vision is well known. In spite of continuing ill-health, which you have mentioned, and even when physical movement was not easy for him, he remained mentally very active and kept up his many interests. He continued to work as a sincere political and social worker. Wisdom and steadfast loyalty to high principles guided his own life and action and he left a deep impression on all those who worked with him. His loss will be greatly felt by our party not only in Bihar but all over the country.

He was here amongst us only a few days ago. Last evening I heard that he was taken ill, but we felt that we could bring him here and that further treatment would have helped him to recover. So, it was a shock when later the news came of his passing away.

We join you, Sir, in offering our deepest sympathy and condolences to the bereaved family.

SHRI SAMAR MUKHERJEE (Howrah) : On behalf of my party, I share the sentiments of sorrow expressed here in this House, and express our sense of bereavement to the family. We know he was a public figure with his record of public service. So his death is loss to the country, and we express our heartfelt sorrow for this.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : अध्यक्ष महोदय, पं० विनोदानन्द झा की दुखद मृत्यु के सम्बन्ध में जिन भावनाओं को प्रधान मंत्री और हमारे दूसरे सदस्यों ने व्यक्त किया है मैं उन भावनाओं के साथ अपनी पार्टी को भी सम्बद्ध करता हूं। पंडित जी के साथ मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध भी बहुत दिनों से रहा है। आजादी के आन्दोलन के समय, जब मैं छोटा था तो मुझे उन के साथ जेलों में रहने का मौका मिला था और मैंने उनके निकट में रहकर देखा कि उन दिनों किस तरीके से स्वतन्त्रता संग्राम में काम करने वाले कार्यकर्त्ताओं को वे उत्साहित करते थे और उनको आगे बढ़ाने की कोशिश किया करते थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वे हमारे सूबे बिहार के बराबर नेता रहे, मुख्य मंत्री भी कई वर्षों तक रहे और उस पद पर रहकर उन्होंने देश और खास तौर से हमारे सूबे की सेवा करने की कोशिश की। इसके अतिरिक्त हमारे देश में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के खिलाफ जो आन्दोलन विश्व आन्दोलन से सम्बद्ध रहकर चलता है उस पीस कौंसिल के भी वे हमारे यहां बहुत दिनों तक अध्यक्ष रह चुके हैं और मुझे भी उसके मंत्री के रूप में उनके साथ काम करने का मौका मिला है। मैंने बराबर देखा कि जब मौका आया उन्होंने सब तरह के आन्दोलनों में हिस्सा लेने की कोशिश की और जहां तक उनसे सम्भव हो सका कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करने की कोशिश की। इसलिए ऐसे सेनानी की दुखद मृत्यु हमारे देश के लिए बहुत दुख की बात है ही, खास तौर से हमारे सूबे के लिए बहुत ही बड़ी क्षति है विशेषकर इस मौके पर हमारा सूबा प्रलयंकारी बाढ़ से ग्रसित है, पीड़ित हैं। ऐसे मौके पर उनका हमारे बीच उपस्थित रहना, बिहार की जनता के बीच उपस्थित रहना आवश्यक था लेकिन इस मौके पर वे हमसे बिछुड़ गए। उनकी तमाम सेवाओं को देखते हुए मैं पुनः अपनी पार्टी की तरफ से उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपके द्वारा उनके परिवार के लोगों के पास संवेदना भेजने के लिए निवेदन करता हूं।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी (ग्वालियर) : अध्यक्ष, जी हम एक गहरी शोक छाया में आज एकत्र हुए हैं। विनोदा बाबू आज हमारे बीच से उठ गए। कल तक उस द्वार के पास हम उन्हें विराजमान देखा करते थे। शरीर पर रोगों ने आक्रमण कर रखा था। अवस्था पर्याप्त हो चुकी थी लेकिन रोगी शरीर में भी उनकी कर्मरत आत्मा जीवन के अन्तिम क्षण तक, शरीर के अन्तिम कण तक राष्ट्र की सेवा में समर्पित रहना चाहती थी। आज 9 अगस्त के दिन जब हम क्रान्ति का त्योहार मना रहे हैं, स्वतन्त्रता संग्राम के एक सेनानी का अपने घर और घर वालों से दूर केरल प्रदेश में मृत्यु का आलिंगन करना नयी पीढ़ी के लिए एक संदेश रखता है। वे चाहते तो सार्वजनिक जीवन से विश्राम ले सकते थे, वे चाहते तो वैराग्य की साधना कर सकते थे लेकिन उनका सारा जीवन कर्मपूत जीवन था। और वह अन्तिम क्षण भी अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए हमारे बीच में से उठ गये। विनोदा बाबू को मैंने अनेक रूपों में देखा, अनेक स्थानों पर देखा। उनका स्नेह स्निग्ध व्यवहार, उनका मधुर व्यक्तित्व, सभी को साथ लेकर चलने का प्रयास, जहां बैठते थे, एक आत्मीयता का मानों मंडल कायम कर देते थे। राजनीतिक मतभेद होते हुए भी कभी प्रतिपक्ष की प्रमाणिकता पर

उन्होंने संदेह नही किया। कभी कमर के नीचे उन्होंने वार नहीं किया। हमारा सार्वजनिक जीवन ऐसे व्यक्तित्वों के अभाव से अकिंचन होता जा रहा है। हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और सच्ची श्रद्धांजलि तो यही हो सकती है कि भगवान हमको भी जीवन के आखिरी क्षण तक उन की तरह से कर्मरत रहने का बल दे।

मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से उनके प्रति विनम्र श्रद्धाभार प्रकट करता हूँ। बिहार के लिए यह चोट बड़ी गहरी है। आप हमारी समवेदनाएं उनके परिवार तथा उनके प्रियजनों तक पहुचा दें। इस दुःख की घड़ी में वे अकेले नहीं हैं। विनोदा बाबू के लिए सारा देश शोक संतप्त है। वह हमारे बीच में नहीं हैं मगर हमारी स्मृति के आकाश में सदैव सुरक्षित रहेंगे।

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): Sir, on behalf of my party, I associate myself with the sentiments expressed by the leader of the House, by yourself and other members at the sad demise of Shri Vinodanand Jha. We have lost a valiant freedom fighter and a seasoned parliamentarian. I request you to kindly convey our deep condolences to the bereaved family.

श्री श्यामनन्दन मिश्र (बेगुसराय): अध्यक्ष महोदय, आज जब बिहार एक गहरी विपत्ति से गुजर रहा है तो निस्सन्देह बिहार के एक शीर्षस्थ नेता विनोदा बाबू के निधन से उसको बड़ा धक्का लगेगा। आपको याद होगा, अध्यक्ष महोदय, जब वह पिछली बार शपथ ग्रहण करने के लिए आए थे तो एक कारुणिक दृश्य यहां उपस्थित हो गया था। स्वास्थ्य उनका साथ नहीं दे रहा था लेकिन इधर चन्द दिनों से जब हम उन को दूसरे कक्ष में बैठे देखते थे तो मालूम होता था कि जिन्दगी की लहर उनमें फिर आ रही है और उस से जो हम लोग उनके अनुयायी थे उन के ऊपर भी मुस्कान और प्रसन्नता थोड़ी आ रही थी।

आज जब हम सभी क्रान्ति दिवस मनाने के लिए बड़े-बड़े आयोजन कर रहे हैं उस समय विनोदा बाबू का निधन हमारे लिए एक खास तौर पर सांघातिक चोट की तौर पर आता है। वह देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद के सच्चे अनुयायियों में थे और बिहार के जो हमारे बड़े नेता डा० श्रीकृष्ण सिंह और डा० अनुगृह नारायण सिंह थे उन के प्रबल समर्थकों और साथियों में से थे। पिछली बार जब चीन का आक्रमण हमारे देश पर हुआ था वह बिहार के मुख्य मंत्री थे और उस समय उन्होंने जिस तरह एक चेतना की लहर सारे बिहार में पैदा कर दी थी उस को पूरी तरह यहाँ व्यक्त नहीं किया जा सकता है। बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि उन का कार्यक्षेत्र बड़ा विविध था और वह मजदूरों में भी बहुत संलग्नता से काम करते थे। जो हमारी जमशेदपुर की यूनियन है उसमें उनका जिस प्रकार का योगदान रहा वैसा योगदान शायद कांग्रेस में कोई नेता नहीं दे पाते थे—प्रोफेसर अब्दुल बारी के बाद। वह बहुत मेधावी थे और यह बात बहुतों को मालूम नहीं कि जितनी अभिरुचि वह नई-नई चीजों के पढ़ने में रखते थे वैसी अभिरुचि आजकल के सार्वजनिक नेताओं में नहीं दिखाई पड़ती वह बड़े संतुलित विचार के थे। संसदीय प्रणाली के सम्बन्ध में हमारी बिहार असेम्बली के लोग कहते थे कि उस में जितने वह दक्ष थे उतना बिहार कांग्रेस दल में कोई नहीं था। हम सब उनकी मृदुभाषा से बड़े

प्रभावित होते थे और जो कोई उनके सान्निध्य में जाता था उनके आकर्षण से वह बचकर नहीं आ सकता था। हम सभी उनके परिवार के साथ शोक संतप्त हैं इस लिए किस को धैर्य बंधाएं? हम सबों को धैर्य बंधाने की जरूरत है। मैं अपनी व अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे।

SHRI P. K. DEO (Kalahandi) : Sir, I had the privilege to know Shri Vinodanand Jha since 1937. When I was a student at Patna he was one of those few stalwarts of freedom fighters from Bihar. It is a great loss to this country. The country is poorer by losing an elder statesman, whose presence would have been very necessary at this time to guide the destiny of this country. On behalf of the Swatantra Party. I fully associate myself with the sentiments of sorrow expressed by yourself and other hon. members, and I offer my condolences to the bereaved family.

SHRI TRIDIB CHAUDHURI (Berhampore) : Sir, while associating myself with the sentiments and the sense of sorrow and grief expressed over the sad demise of Shri Vinodanand Jha, I have to make a reference to one fact, which is not known to many people. From the days of the first world war, Shri Vinodanand Jha was also a very active member of the underground revolutionary movement in this country. That aspect of his life and career is not known to many people. Subsequently, when Mahatma Gandhi gave the call, he joined the Congress and as Mr. Mishra just now stated, he became one of the most intimate followers and associates of Dr. Rajendra Prasad. I also cannot but feel extremely sorry because as a Bengali, I do remember that he was one of our senior Bihari friends, who always worked for Bengali-Bihari friendship and he was one of those Bihari leaders who could speak the chastest and most elegant Bengali, far better than many Bengalis themselves. About his sweet behaviour to friends and political opponents, everybody has made mention. I again associate myself with the sentiments expressed by you, by the Prime Minister and by our other colleagues.

DR. MELKOTE (Hyderabad) : Sir, on behalf of the T. P. S., I would like to say that I had known Shri Vinodanand Jha for a long number of years. He was a stalwart in the political field, a leader of Bihari and a man of learning and stature. I associate myself entirely with the sentiments expressed by the Leader of the House, by you and by other members and I would request you to convey our condolences to the bereaved family.

DR. KARNI SINGH (Bikaner) : Sir, on behalf of the United Independents Parliamentary Group, we wish to associate ourselves in expressing our sense of grief over the passing away of a very senior member of this House. Shri Binodanand Jha. He was a very great parliamentarian and a very simple and kind-hearted person. We request you to convey our most heart-felt condolences to the bereaved family.

SHRI M. MUHAMMED ISMAIL (Manjeri) : Sir, on behalf of my party, the Muslim league, and my own behalf I associate myself with the tributes paid and the condolences expressed in the House on the sad demise of the worthy gentleman, Shri Jha. He was a leading member of the Constituent Assembly and his valued experience would have been of service to the country, particularly at this moment of our history. I, therefore, request that our condolences may be included when they are being conveyed to the members of the bereaved family.

MR. SPEAKER : The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

———

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

विदेशों में भारतीय साँस्कृतिक केन्द्र

*1621. **श्री शंकर दयाल सिंह:** क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) उन देशों के नाम क्या हैं जहां भारतीय संस्कृतिक केन्द्र स्थापित किये गये हैं ; और

(ख) क्या उनमें काम कर रहे अधिकारियों के लिए भारतीय संस्कृति का विशेष ज्ञान आवश्यक है ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH) : (a) and (b). No Indian Cultural Centres have so far been established abroad under Government auspices. Most of our missions abroad, however, maintain libraries and reading-rooms and arrange film shows and our Public Relation Officers and Information Officers pay particular attention to cultural affairs, for which they are reasonably well equipped.

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं जानना चाहता हूँ कि कौन से और कितने ऐसे देश हैं जहां पर हमारे कल्चरल अटैची हैं और क्या उनको भारतीय साहित्य और भारतीय संस्कृति का पर्याप्त ज्ञान है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : सब जगहों के नाम तो मेरे पास नहीं हैं लेकिन कल्चरल अटैची बहुत सी जगहों पर हमारी एम्बैसीज में हैं, लंदन में हैं, मास्को में हैं, न्यूयार्क में हैं, वाशिंगटन में हैं। और भी बहुत सी जगह हैं। जैसा मैंने सवाल के जवाब में कहा है हमारे जितने भी कर्मचारी वहां काम कर रहे हैं इस विभाग में वे काफी कुछ कल्चरल अफेयर्ज़ के बारे में जानते हैं और उनको इसका ज्ञान भी है। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

श्री शंकर दयाल सिंह : हिन्दी के बहुत बड़े पत्रकार और लेखक श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन जो दिनमान के सम्पादक हैं उन्होंने अपने पिछले एक लेख में लिखा है कि जब वह विदेशों में अपने भारती दूतावास में गए तो उनका परिचय इस रूप में कराया गया : Here is the writer of the famous Kamasutra. इससे यह पता चलता है कि विदेशों में जो हमारे दूतावास हैं और जो कर्मचारी इस काम को करते हैं और जो उच्च पदों पर हैं या छोटे पदों पर हैं उनको भारतीय संस्कृति का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या यह बात सही है कि विदेशों में जो लोग हैं वे भारत की जो आत्मा है, जो भारतीय संस्कृति और साहित्य है उसका पर्याप्त ज्ञान नहीं रखते हैं और जो कुछ रखते भी हैं उनको बाहर जा कर भूल जाते हैं और इसी में अपनी शान समझते हैं ? अतः क्या ऐसे लोगों को बाहर भेजने के पहले सरकार उनको संस्कृतिक ज्ञान कुछ परिचय देती हैं या नहीं देती है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : जो भी हमारे कर्मचारी या अफसर जाते हैं इस काम को